विष्ठातत्र लान ज्याकुछ द्राय छाष्ट्र



नाइलि यगव वानावानि...



त्रर्धिक त्रस्रख् देधसव्यदि छलि श्रविष्णाध कढ़न



🤦 जूठि-काठाता

क्तनाकांग



र अप निन, जाला द्राजि स्मत् वजार् वायुन।

पाशिखुव प्राप्य क्षप निन, छाला क्रिष्ठि स्मव विष्ठार वायून । स्मार्छ द्यान, व्यार्थिक मृष्यला स्नान हलून ।





আরো জানতে হ'লে, এখানে দেখুন www.rbi.org.in মতামতের জন্যে, এখানে লিখে জানান rbikehtahai@rbi.org.in

